हे साधना के उन्मुक्त पथिक

हे साधना के उन्मुक्त पथिक,कुछ नूतन पथ की तलाश करो,
मंजिल पर जाने की चाह जिसे, अब उनकी राहें आसान करो,
अब आगे कदम कुछ तीव्र करो, अब कुछ तो तप को नवीन करो।
हे योगी कुछ नूतन पथ की तलाश करो,.....
जो चले जा रहे वर्षों से पर, भ्रमित हो रहे आज तलक,
कुछ ऐसा दीप बनो जलकर,हर पगडंडी को कर दो रोशन,
अज्ञान तिमिर में जो भयभीत खड़े, प्रखर-पुंज बन उन्हें राह दो,
खुद बने उजाला जीवन का, अब माया से न हो शोषण।
बस नेत्र तीसरा तेज करो,अब कुछ तो ज्योति प्रदीप करो
कुछ नूतन पथ की तलाश करो,.....
जो पाप धो रहे सदियों से,पर बोझ बढ़ाये जाते हैं,
जो भटक रहे जीवन पथ पर,और मंजिल से हैं दूर बहुत,
कुंठित कलुसित तपती रूहों पर,कुछ तो शीतल फुहार करो,
गंगा बनकर ज्ञानामृत की,उज्ज्वल पावन पतवार बनो,
खुद ही खुद को निर्मल कर लें, कुछ उनके पाप रिलीज करो।
कुछ नूतन पथ की तलाश करो,.....
बीमार करूण क्रन्दन करते, जो आधाकल्प से तड़प रहे,
दर-दर ठोकर खाते फिरते,बस वैद्यनाथ को तलाश रहे,
माया रावण के विकारों ने,सदियों से जिन्हें लाचार किया,
अपनी पीड़ा को कम कर लें, राहत रूह ऐसी आश धरे।
उनके लिए संजीवनी बनकर,कुछ तो जीवन का विकास करो,
कुछ नूतन पथ की तलाश करो,.....

विघ्नों की आँधी में जो उलझ रहे,या अटक गये हैं किनारों में,
स्वर्णिम मृग में कुछ लटक पड़े,या चटक गये इच्छाओं में,
उनके भ्रम को कुछ दूर करो,जो झूठी खुशियों में चिपक गये,
अब साथ उन्हें भी लेके चलो, जो मंजिल से काफी पिछड़ गये,
खुद अपने पर परवाज चढ़ें,कुछ ऐसा रूधिर संचार करो।
कुछ नूतन पथ की तलाश करो,.....
नहीं चाह कभी सूरज ने रखी,पथ दिशा दिखाये कोई मुझे,
जग का सारा अन्धियार मिटा, सब पथ आलोकित है करता,
हे योगी हे सनत कुमार, तुम भी तो ज्ञान सूर्य के प्रतिनिधि हो,
मुर्छित से सुर्जित मानवता हो, ये तुमसे आशा त्रिभुवन करता,
हे भृगुऋषि के राजऋषि,कुछ उर्जा का प्रचण्ड प्रवाह करो।
कुछ नूतन पथ की तलाश करो,.....

ओम शान्ति